औषधि बतला सकते हैं ? तुम्हारी स्थिति तो मुझसे फिर भी अच्छी है। तुम्हारे माता-पिता इतनी ज़्यादा अपनी मनमानी करने पर नहीं तुले हैं, जितने मेरे। तुम्हारे लिए तो यह निश्चित है कि अगर तुमने स्वयं अपने पिता से अपनी राय ज़ाहिर कर दी, तो वह मान लेंगे; किन्तु मेरे लिए तो यह तरीक़ा भी नहीं रहा। मेरे पिता तो ख़ैर कम, लेकिन माँ ने तो उस धूर्त्त पण्डित के बहकावे में आकर अपने प्राण की बाज़ी लगा रक्खी है। वह कहती हैं कि अगर रामदीन की लड़की से मैंने शादी न की, तो वह अपनी जान दे देंगी। अब बतलाओ मैं क्या करूँ ?

आनन्द—क्या बतलाऊँ यार ? मैं नहीं समझता कि माता-पिता लड़के-लड़कियों के विवाह में क्यों ज़बरदस्ती करते हैं। वे यह नहीं समझते कि जिससे जन्मभर का सम्बन्ध हो; जिसके साथ ज़िन्दगी बितानी हो, उसे लड़के-लड़की अपनी इच्छानुसार क्यों न चुनें। उन्होंने तो अनिच्छित और बेजोड़-विवाह कर अपने सिर का भार टाल दिया, और गया वह दूसरों के सिर पर। माता-पिता तो चार दिन बाद चलते बनते हैं, और भोगना पड़ता है लड़के-लड़कियों को। स्त्री-पुरुष यदि एक-दूसरे को अच्छे मिले, तो जन्म सफल हो जाता है, और यदि दुर्भाग्य से एक-दूसरे की पसन्द के अनुसार न मिले, तो जीवन नष्ट हो जाता है।